# आकार IAS

Shaping Your Dreams

# भारतीय अर्थव्यवस्था

## प्रारंभिक परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण

THE WORLD BANK

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
mail.: aakarias2014@gmail.com, web.: www.aakarias.com
Call.: 9713300123, 6262856797, 6262856798

# विषय सूची (CONTENTS)


| क्रमांक | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 01 | भारतीय अर्थव्यवस्था | 01 - 04 |
| 02 | आर्थिक वृद्धि एवं राष्ट्रीय आय | 05 - 07 |
| 03 | आर्थिक विकास | 08 -11 |
| 04 | भारत में नियोजन | 12 - 13 |
| 05 | भारत में पंचवर्षीय योजनाएं | 14 - 16 |
| 06 | कृषि, कृषि संबंधी प्रमुख क्रांतियां एवं अन्य | 17 - 25 |
| 07 | औद्योगिक नीति | 26 - 32 |
| 08 | भारत में उद्योग | 32 - 35 |
| 09 | भारतीय वित्तीय प्रणाली एवं बैंकों का विकास | 36 - 37 |
| 10 | रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया एवं साख नियंत्रण | 38 - 41 |
| 11 | वाणिज्यिक बैंक तथा वित्तीय संस्थाएं | 42 - 44 |
| 12 | क्षेत्रीय बैंक एवं सहकारी बैंक | 44 |
| 13 | अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं | 45 |
| 14 | गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं | 46 |
| 15 | पूंजी बाजार एवं वित्तीय संस्थान | 47 - 50 |
| 16 | राजकोषीय नीति व लोक वित्त | 51 - 53 |
| 17 | भारत में बजटरी व्यवस्था | 54 - 55 |
| 18 | बजट के अवयव एवं बजटीय घाटे की विभिन्न अवधारणाएं | 56 - 58 |
| 19 | भारतीय कर व्यवस्था | 59 - 61 |
| 20 | जनांकिकीय एवं जनांकिकीय लाभांश | 62 - 63 |
| 21 | विदेशी व्यापार | 64 - 68 |
| 22 | भुगतान संतुलन | 68 - 69 |
| 23 | वस्तु एवं सेवा कर - जीएसटी | 70 - 71 |


आकार IAS Shaping Your Dreams



160/4-AB Road, Pipalya Rao, Indore, Near Vishnupuri I-Bus Stop
**e-mail :** aakarias2014@gmail.com ; **Website :** www.aakarias.com
**CONTACT :** 9713300123, 8770675662

# भारतीय अर्थव्यवस्था
# Indian Economy

## ❒ अर्थव्यवस्था क्या है (What is Economy)

जब हम किसी देश को उसकी समस्त आर्थिक क्रियाओं के संदर्भ में परिभाषित करते हैं, तो उसे उस देश की अर्थव्यवस्था कहते हैं। आर्थिक क्रिया किसी देश के आर्थिक एजेण्डों, व्यापारिक क्षेत्र, घरेलू क्षेत्र तथा सरकार द्वारा दुर्लभ संसाधनों के प्रयोग, वस्तुओं तथा सेवाओं के उपभोग, उत्पादन तथा वितरण से सम्बन्धित है।

अर्थव्यवस्था की समग्र आर्थिक क्रियाओं का सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक अध्ययन ही अर्थशास्त्र है, अर्थात् –अर्थव्यवस्था, अर्थशास्त्र का व्यवहारिक रूप है। यह कृषि, उद्योग व व्यापार के अंतरसंबंधों की ऐसी प्रणाली है, जिसके जरिये उपलब्ध संसाधनों का दोहन और नवीन संसाधनों का निर्माण किया जाता है। दूसरे शब्दों में किसी राष्ट्र द्वारा लोककल्याण के उद्देश्य से उपलब्ध संसाधनों का समुचित नियोजन करते हुए अर्थ को केन्द्र में रखकर बनाई गई व्यवस्था ही अर्थव्यवस्था कहलाती है।

अर्थव्यवस्था एक अधूरा शब्द है, जब तक इसके आगे किसी देश या किसी क्षेत्र का नाम नहीं जोड़ा जाए, जैसे – भारतीय अर्थव्यवस्था, चीनी अर्थव्यवस्था, विकासशील अर्थव्यवस्था, विकसित अर्थव्यवस्था आदि।

## ❒ अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण (Types of Economy)

अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण निम्नलिखित आधार पर किया जाता है –

**अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण**

| सरकार की भूमिका के आधार पर | विकास की अवस्था के आधार पर | विश्व के साथ संबंधों के आधार पर |
|---|---|---|
| – पूंजीवादी (Capitalist) | – विकसित (Developed) | – बंद (Closed) |
| – समाजवादी (Socialist) | – विकासशील (Developing) | – खुली (Open) |
| – मिश्रित (Mixed) | – अल्पविकसित (Under-Devoloping) | |

### ◆ सरकार की भूमिका के आधार पर

1) **पूंजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy)** – यह अहस्तक्षेप के सिद्धान्त (लैसेज फेयर) पर आधारित होती है। ऐसी अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्रों व बाजार की भूमिका प्रभावकारी होती है और आर्थिक गतिविधियों में राज्य व सरकार की भूमिका सीमित होती है। यहां पर आर्थिक क्रियाओं को बाजार शक्तियों (Market Forces) पर छोड़ दिया जाता है। उदाहरणार्थ – अमेरिका, कनाड़ा, मैक्सिको आदि।

2) **समाजवादी अर्थव्यवस्था (Socialist Economy)** – यह ऐसी अर्थव्यवस्था है, जिसमें आर्थिक क्रियाओं का निर्धारण व नियंत्रण सरकार द्वारा होता है। इसलिए इसे नियंत्रित अर्थव्यवस्था भी कहा जाता है। यहां बाजार कारकों की भूमिका सीमित होती है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जहां लाभ आधारित होती है, वहीं समाजवादी अर्थव्यवस्था कल्याणकारी राज्य की संकल्पना पर आधारित होती है। उदाहरणार्थ – चीन, वियतनाम, क्यूबा, उत्तर कोरिया आदि।

3) **मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy)** – मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था दोनों की विशेषताएं पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ – भारत, नार्वे, स्वीडन आदि। मिश्रित अर्थव्यवस्था के 03 रूप हो सकते हैं –

   a) **बाजार मिश्रित अर्थव्यवस्था (Market Mixed Economy)** – इस प्रणाली में बाजार तंत्र की प्रधानता होती है।

   b) **नियोजित मिश्रित अर्थव्यवस्था (Planned Mixed Economy)** – इस तंत्र में राज्य की भूमिका प्रमुख होती है तथा बाजार तंत्र सहायक रूप में होता है।

c) **उदारवादी व्यवस्था (Liberalised Economy)** – इसे बाजार प्रधान नियोजित मिश्रित व्यवस्था भी कहते है। इस व्यवस्था में नियोजन के साथ बाजार तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी के प्रति अधिक उदारवादी नीति अपनाई जाती है।

**नोट** – भारत में नव आर्थिक सुधारों (1991) के बाद से ही यह व्यवस्था प्रचलित है। भारत में पिछले कुछ वर्षों से आधारभूत क्षेत्र में तेजी विकास के लिए पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) मॉडल को अपनाया गया है।

- **विकास की अवस्था के आधार पर**

1) **विकसित (Developed)** – ऐसी अर्थव्यवस्था, जो औद्योगिक विकास की उच्च अवस्था तक पहुंच चुकी है, उन्हें विकसित अर्थव्यवस्था कहा जाता है। ये अर्थव्यवस्थाएं अपने संसाधनों एवं अपनी विकास संभावनाओं का दोहन कर चुकी हैं। अत: अपने विकास के स्तर को बनाए रखने के लिए नवीन बाजारों की तलाश करती हैं। इन अर्थव्यवस्थाओं की GDP में सेवा क्षेत्र का योगदान अधिक होता है। उदाहरणार्थ – यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, कनाडा आदि।

2) **विकासशील (Developing)** – ऐसी अर्थव्यवस्था, जहां औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया अपेक्षाकृत देर से शुरू हुई है। इन अर्थव्यवस्थाओं के द्वारा अब तक अपने संसाधनों व विकास संभावनाओं को अपेक्षित दोहन संभव नहीं हो सका है। यहां जी. डी. पी. में कृषि क्षेत्र का हिस्सा घट रहा होता है व औद्योगिक व सेवा क्षेत्र का हिस्सा बढ़ रहा होता है। उदाहरणार्थ – भारत, चीन, मलेशिया, पाकिस्तान आदि।

3) **अल्पविकसित (Under-Devoloping)** – ऐसी अर्थव्यवस्था, जो अपने विकास के आरंभिक चरण में है और जो अपने संसाधनों व विकास संभावनाओं का अभी भी दोहन नहीं कर पा रही है। यहां GDP में प्राथमिक क्षेत्र की भूमिका अभी भी अहम है। उदाहरणार्थ – बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, म्यमांर आदि।

**नोट** – 2016 के बाद विश्व बैंक ने विकसित, विकासशील एवं अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के स्थान पर निम्नलिखित अवधारणा प्रस्तुत की है –

1) **निम्न आय** – जिस देश की प्रतिव्यक्ति आय 995 डॉलर से कम हो।
2) **निम्न-मध्यम आय** – जिस देश की प्रतिव्यक्ति आय 996 से 3895 डॉलर हो।
3) **उच्च-मध्य आय** – जिस देश की प्रतिव्यक्ति आय 3896 से 12055 डॉलर हो।
4) **उच्च आय** – जिस देश की प्रतिव्यक्ति आय 12055 डॉलर से अधिक हो।

**भारत की प्रतिव्यक्ति आय के अनुसार इसे निम्न-मध्यम आय श्रेणी के देशों में शामिल किया गया है।**

- **विश्व के साथ संबंधों के आधार पर**

1) **बंद (Closed)** – ऐसी अर्थव्यवस्था, जो शेष विश्व के साथ संबंधों के प्रति उदासीन है या आत्मनिर्भरता पर बल देते हुए विश्व के साथ संबंधों को हतोत्साहित करती है। यह संरक्षणवाद पर बल देती है।

2) **खुली (Open)** – यह संरक्षणवाद की बजाये प्रतिस्पर्धा पर बल देती है। यह शेष विश्व के साथ आर्थिक क्रियाओं को सम्पन्न करती है, जिसमें वस्तु, सेवा, पूंजी, निवेश और तकनीक के मुक्त प्रवाह को प्रोत्साहित करती है।

➢ विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण प्रथम विश्व, द्वितीय विश्व, तृतीय विश्व एवं चतुर्थ देशों के रूप में भी किया जाता है।

1) **प्रथम विश्व के देश** – अमेरिका समर्थित देशों का समूह, जो नाटो (North Athlantic Treaty Organisation - NATO) के सदस्य थे एवं यहां पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था विद्यमान थी। इसमें अमेरिका के साथ मुख्यत: पश्चिमी यूरोप के देश शामिल थे।

2) **द्वितीय विश्व के देश** – रूस समर्थित देशों का समूह, जहां पर मार्क्सवादी विचारधारा एवं समाजवाद की अवधारणा थी। इसमें रूस, चीन, क्यूबा आदि ऐसे देश शामिल थे, जहां पर राज्य का नियंत्रण सर्वोपरि था।

3) **तृतीय विश्व के देश** – शीत युद्ध के समय पूरा विश्व लगभग दो समूहों में बंट गया था। एक तरफ अमेरिका जैसी पूंजीवादी राष्ट्र थे, तो दूसरी तरफ रूस जैसे समाजवादी राष्ट्र। दोनों ही प्रकार के राष्ट्र स्वयं को शक्तिशाली दिखाने हेतु हथियारों की प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। ऐसे समय में जो राष्ट्र नवस्वाधीन थे, वे हथियारों की हौड़ से बचते हुए अपना विकास करना चाहते थे। अत: इन राष्ट्रों ने उपरोक्त दोनों राष्ट्रों का समर्थन न कर गुटनिरपेक्षता की स्थापना की। इस

संगठन में शामिल देशों को ही तृतीय विश्व के देश कहा जाता है। उदाहरणार्थ – भारत, दक्षिण अफ्रीका एवं दक्षिण अमेरिकी व एशियाई देश।

## ❐ आर्थिक गतिविधियों का वर्गीकरण (Classification of Economic Activities)

प्रत्येक अर्थव्यवस्था में मानव के वे तमाम क्रिया-कलाप, जो आय सृजन में सहायक होते हैं, उन्हें आर्थिक गतिविधियां या क्रिया की संज्ञा दी गई है। पारम्परिक रूप से इन आर्थिक क्रिया-कलापों का वर्गीकरण 3 श्रेणियों में किया गया है, यथा – प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र। वर्तमान परिदृश्य में आर्थिक गतिविधियों के स्वरूप में 02 और क्षेत्रक परिकल्पित हो गए हैं। अर्थव्यवस्था में आर्थिक गतिविधियों को निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में बांटा गया है –

### ◆ प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector)

इसके अन्तर्गत उन आर्थिक गतिविधियों को शामिल किया जाता है, जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति पर निर्भर होती हैं। प्राकृतिक संसाधनों (Natural Resources) के प्रत्यक्ष दोहन (Direct Utilization) द्वारा जिन वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, उन्हें प्राथमिक वस्तुएं (Primary Goods) तथा ऐसी वस्तुओं के उत्पादन में संलग्नता को प्राथमिक क्षेत्र कहते हैं। इसमें कृषि, पशु पालन, मत्स्य पालन, खनन आदि क्षेत्रों को शामिल किया जाता है।

### ◆ द्वितीयक क्षेत्र (Secondary Sector)

इसके अन्तर्गत उन आर्थिक क्रिया-कलापों को शामिल किया जाता है, जो उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन या प्राथमिक वस्तुओं का रूप बदलकर उसका मूल्यवर्धन (Value Addition) कर देते हैं। इसके अन्तर्गत निर्माण (Construction), विनिर्माण (Manufacturing) और प्रसंस्करण (Processing) से संबंधित गतिविधियां आती हैं।

### ◆ तृतीयक क्षेत्र (Tertiary Sector)

तृतीयक क्षेत्र के क्रियाकलापों का सम्बन्ध सामान्यत: सेवा गतिविधियों से जुड़ता है, जिनमें मानव की मानसिक श्रमशक्ति की अहम भूमिका होती है। परिवहन, संचार, व्यापार, बैंकिंग, बीमा, शिक्षा, पर्यटन, स्थावर सम्पदा (रियल एस्टेट) इसके अन्तर्गत आते हैं। यह द्वितीय क्षेत्र से इस मायने में भिन्न है कि सेवाओं द्वारा उपलब्ध विशेषज्ञता सेवाप्रदाता की कुशलता, विशेषज्ञता, अनुभव एवं ज्ञान पर निर्भर करती है, वहीं द्वितीयक क्षेत्र के उत्पादन में तकनीक, मशीन व उत्पादन प्रक्रिया की अहम भूमिका होती है।

### ◆ चतुर्थक क्षेत्र (Quartenery Sector)

इस क्षेत्र के अन्तर्गत ज्ञान आधारित उद्योगों को शामिल किया जाता है। इस क्षेत्र से सम्बद्ध गतिविधियां अनुसंधान व विकास (R & D) पर केन्द्रित होती है। इसकी परिकल्पना म्यूचअल-फण्ड प्रबंधकों से लेकर कर-परामर्शदाताओं और साफ्टवेयर सेवाओं की मांग में होने वाली वृद्धि व इसके बढ़ते महत्व के आलोक में की गई।

### ◆ पंचक क्षेत्र (Quianry Sector)

इसके अन्तर्गत उच्चतम स्तर पर निर्णय-प्रक्रिया से सम्बन्धित गतिविधियों को शामिल किया जाता है। इसल क्षेत्र से संलग्न लोग उस संस्थान पर शीर्ष पर मौजूद होते हैं। नीतियों के निर्धारण एवं निर्णय प्रक्रिया में इनकी भूमिका के मद्देनजर इनका महत्व कई अधिक होता है। इन्हें **गोल्ड-कॉलर जॉब** के अन्तर्गत रखा जाता है। इसके अन्तर्गत वरिष्ठ व्यवसायिक अधिकारियों, अनुसंधान वैज्ञानिकों, विधि व वित्त परामर्शदाताओं आदि को शामिल किया जाता है। इसके अन्तर्गत ई-लर्निंग, बौद्धिक सम्पदा संस्थान, विधि व्यवसाय, बैंकिंग क्षेत्रक आदि को शामिल किया जाता है।

## ❐ उत्पादन के साधन (Means of Production)

एक उत्पादक को किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन के लिए कुछ वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है, जिन्हें हम उत्पादन के साधन कहते हैं। सामान्यत: उत्पादन के साधनों को 04 भागों में बांटा जाता है –

1) **भूमि (Land)** – भूमि उत्पादन का निष्क्रिय साधन है। इससे तात्पर्य भौतिक वस्तुओं, जैसे – मकान, दुकान, खान, खेत, वन, नदी, पर्वत आदि से हैं। जब इसे उत्पादन के साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो इसके प्रतिफल के रूप में **लगान/किराया (Rent)** देय होता है। दूसरे शब्दों में भूमि के प्रयोग के बदले दी जाने वाली कीमत को लगान कहते हैं।

2) **श्रम (Labour)** – श्रम उत्पादन का एक सक्रिय साधन है। अर्थशास्त्र में श्रम से अभिप्राय मनुष्य के शारीरिक, बौद्धिक एवं

मानसिक कार्यों से है, जिसका प्रयोग वह धन अर्जित करने हेतु करता है। श्रम के प्रयोग के लिए दिए जाने वाले प्रतिफल को **मजदूरी (Wages)** कहते हैं।

3) **पूंजी (Capital)** – पूंजी उत्पादन सर्वाधिक गतिशील साधन है। सरल शब्दों में पूंजी मनुष्य द्वारा उत्पादित आय का वह भाग है, जिसका उपयोग अधिक मात्रा में धन उत्पादन करने हेतु किया जाता है। उत्पादन प्रक्रिया में पूंजी की सेवाओं के बदले पूंजीपति को जो प्रतिफल प्राप्त होता है, उसे **ब्याज (Interest)** कहते हैं।

4) **उद्यम/साहस (Enterprise/Risk)** – जो उत्पादन प्रक्रिया में जोखिम व अनिश्चिता को सहन करता है, वही उद्यमी/साहसी कहलाता है। उसे जोखिम उठाने के बदले जो प्रतिफल प्राप्त होता है, उसे **लाभ (Profit)** कहते हैं।

## ❐ भारतीय अर्थव्यवस्था के मूल लक्षण (Salient Features of Indian Economy)

भारत को विश्व के विकासशील देशों में से एक मानते हुए इसकी मूल विशेषताएं निम्नानुसार है –

1) **प्रतिव्यक्ति आय का निम्न स्तर** – वैश्विक मानव विकास रिपोर्ट–2018 के अनुसार वर्ष 2017 में कतर एवं सिंगापुर का प्रतिव्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (GNI), जहां क्रमशः 1,16,818 डॉलर एवं 82,503 डॉलर रहा, वहीं भारत का प्रतिव्यक्ति GNI मात्र 6,353 डॉलर थी। विश्व बैंक के एथलस मैथड के अनुसार भारत को निम्न मध्यम आय अर्थव्यवस्था में शामिल किया है।

2) **व्यवसायिक ढांचा** – कुल रोजगार का लगभग 47–49 प्रतिशत कृषि एवं सहबद्ध कार्य में लगा है, जबकि राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान मात्र 16.5 प्रतिशत रहा। कृषि में प्रतिव्यक्ति निम्न उत्पादकता पाई गई।

3) **बेरोजगारी एवं अल्परोजगार** – भारत में श्रम प्रचुर तत्व (Abundant Factor) होता है। विकसित देशों में बेरोजगारी की प्रकृति चक्रीय (Cyclical) होती है और समर्थ मांग के अभाव में ही उत्पन्न होती है। भारत जैसे देशों में बेरोजगारी का स्वरूप संरचनात्मक होता है। इसका बड़ा कारण पूंजी की कमी का होना है। कृषि में श्रम का सीमांत उत्पादन नगण्य, शून्य अथवा नकारात्मक है। अतः कृषि में अदृश्य अथवा गुप्त बेरोजगारी विद्यमान है। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अनुसार भारत में 77 प्रतिशत परिवारों के पास स्थायी वेतन की व्यवस्था नहीं है। 67 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय 10,000 रुपए प्रतिमाह से कम है तथा बेरोजगारी दर 05 प्रतिशत है। NSSO के द्वारा 2019 में जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार भारत में बेरोजगारी दर 6.1 प्रतिशत रही, जो कि पिछले 45 वर्षों में सर्वाधिक है।

4) **निम्नस्तरीय मानव पूंजी** – भारतीय अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण लक्षण इसकी निम्नस्तरीय मानव पूंजी की किस्म है। UNDP ने वैश्विक देशों को मानव विकास सूचकांक (HDI) के आधार पर स्थान दिया है, जिसमें भारत का 129वां स्थान है।

5) **पूंजी का अभाव** – भारतीय अर्थव्यवस्था के अल्पविकास का एक अन्य मूल कारण पूंजी का अभाव है, जो दो रूपों में प्रकट होती है – प्रथम, प्रतिव्यक्ति उपलब्ध पूंजी की निम्न मात्रा। द्वितीय, पूंजी निर्माण (Capital Formation) की प्रचलित निम्न दर। भारत में लक्षित पूंजी निर्माण दर 40 प्रतिशत है, जबकि प्राप्त केवल 30 प्रतिशत तक ही हो पाई है।

6) **परिसम्पत्तियों का दोषपूर्ण वितरण** – भारतीय अर्थव्यवस्था में परिसम्पत्तियों के वितरण में घोर असमानता विद्यमान है। जनवरी, 2019 में ऑक्सफेम इन्टरनेशनल ने वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसके अनुसार भारत के 09 सबसे अमीर व्यक्तियों की सम्पत्ति आधी आबादी की सम्पत्ति के लगभग बराबर है। भारत के 1 प्रतिशत अमीर व्यक्तियों के पास कुल सम्पत्ति का 51.53 प्रतिशत है, 10 प्रतिशत अमीर व्यक्तियों के पास कुल सम्पत्ति का 77.4 प्रतिशत है, जबकि 60 प्रतिशत गरीब व्यक्तियों के पास कुल सम्पत्ति का केवल 4.8 प्रतिशत है।

7) **जनांकिकीय लक्षण** – अल्पविकास के साथ सम्बन्धित जनांकिकीय लक्षणों में जनसंख्या का अधिक घनत्व, 0–15 आयु वर्ग में जनसंख्या का बड़ा आनुपात और कार्यकारी आयु वर्ग अर्थात् – 15–64 आयु वर्ष के मध्य जनसंख्या का बड़ा अनुपात होते हुए भी अकुशल है। इसके अतिरिक्त जीवन की औसत प्रत्याक्षा कम और शिशु मृत्यु दर अधिक होती है। भारत में 64.4 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या विद्यमान है।

**नोट** – भारतीय अर्थव्यवस्था एक श्रम आधिक्य वाली अर्थव्यवस्था है, जिसमें कृषि की प्रधानता है, लेकिन इसमें न्यूनतम प्रतिव्यक्ति आय तथा वृहद बेरोजगारी विद्यमान है।

# आर्थिक वृद्धि
# ECONOMIC GROTH

आर्थिक वृद्धि एक भौतिक अवधारणा है। आर्थिक वृद्धि से तात्पर्य किसी समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था में होने वाली वास्तविक आय वृद्धि से है। दूसरे शब्दों में प्रतिव्यक्ति आय में लम्बे समय तक निरन्तर होने वाली वृद्धि को आर्थिक वृद्धि कहते हैं। सामान्यत: यदि यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) तथा प्रतिव्यक्ति आय (PCI) में वृद्धि हो रही हो, तो हम कहते हैं कि आर्थिक संवृद्धि हो रही है। परन्तु **आर्थिक संवृद्धि की माप के लिए प्रतिव्यक्ति आय को ही सबसे उपयुक्त माप माना जाता है**। स्पष्ट है कि आर्थिक वृद्धि मात्रात्मक (Quantitative) परिवर्तन से संबंधित है।

## राष्ट्रीय आय

सरल शब्दों में किसी राष्ट्र में एक वित्तीय वर्ष में अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन का कूल मौद्रिक मूल्य ही राष्ट्रीय आय कहलाती है। राष्ट्रीय आय से संबंधित सभी अवधारणाों, सूचनाओं, तथ्यों और समस्याओं को सांख्यिकी विवरण में प्रस्तुत करने के तरीके को राष्ट्रीय आय लेखांकन (NIA) कहा जाता है, जिसे केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (CSO) द्वारा जारी किया जाता है। **साइमन कुजनेट्स** को **राष्ट्रीय आय लेखांकन का जन्मदाता** माना जाता है और इसके लिए इन्हें अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार (1971) भी मिला है। राष्ट्रीय आय को समझने से पूर्व इससे संबंधित विभिन्न अवधारणाओं को समझना महत्वपूर्ण है, जो कि निम्नलिखित हैं –

1) **सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product) -** किसी देश की **घरेलू सीमा** के अंतर्गत **एक वित्तीय वर्ष** में सभी उत्पादकों (सामान्य निवासियों तथा गैर निवासियों) द्वारा उत्पादित समस्त **अंतिम** वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल **मौद्रिक** मूल्य से है।

2) **सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product) -** सकल राष्ट्रीय उत्पाद से आशय एक वित्तीय वर्ष में एक देश के सामान्य **नागरिकों** द्वारा देश की **घरेलू सीमा के अन्दर** तथा **बाहर** उत्पादित की गई अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के सकल मौद्रिक मूल्य से है। दूसरे शब्दों में जब हम सकल घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को जोड़ते हैं, तो सकल राष्ट्रीय उत्पाद प्राप्त होता है।

**GNP = GDP + X - M**

जिसमें, **X** = देशवासियों द्वारा विदेशों में अर्जित आय।

**M** = विदेशियों द्वारा देश में अर्जित आय।

उपर्युक्त समीकरण से स्पष्ट है कि यदि X = M है तो GNP = GDP होगा। इसी प्रकार जब बंद अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत भी GNP = GDP होगा। स्पष्ट है कि यह सदैव आवश्यक नहीं है कि सम्पूर्ण GDP देशवासियों की उत्पादक सेवाओं का ही परिणाम होती है। वास्तव में GDP का कुछ भाग उन विदेशियों की सेवाओं का परिणाम हो सकता है, जिन्होंने अपनी पूँजी तथा तकनीकी का उपयोग करके देश के कुल उत्पाद में कुछ भाग का उत्पादन किया है। ऐसी स्थिति में GNP में समस्त GDP सम्मिलिति नहीं की जाएगी। GNP में GDP का केवल वही भाग सम्मिलित किया जाएगा, जो देश के नागरिकों की उत्पादक सेवाओं का परिणाम है। अगर विदेशों से प्राप्त आय धनात्मक है, तो उस वर्ष GNP, GDP से अधिक होगा, और यदि विदेशों से प्राप्त आय ऋणात्मक है, तो उस वर्ष GNP, GDP से कम होगा

3) **शुद्ध घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product) –** जब हम GDP में से मूल्य ह्रास घटाते हैं, तो हमें शुद्ध घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है। यहां मूल्य ह्रास से तात्पर्य किसी अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में कुल घिसावट या टूट-फूट से है। वास्तव में जिन संसाधनों द्वारा उत्पादन किया जाता है, उनमें उपयोग के दौरान मूल्य ह्रास होता है।

**NDP = GDP - Depreciation**

4) **शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product)** – जब हम GNP में से मूल्य ह्रास घटाते हैं, तो हमें शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद प्राप्त होता है। यहां मूल्य ह्रास से तात्पर्य किसी अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में कुल घिसावट या टूट-फूट से है। वास्तव में जिन संसाधनों द्वारा उत्पादन किया जाता है, उनमें उपयोग के दौरान मूल्य ह्रास होता है।

**NNP = GNP - Depreciation**

5) **राष्ट्रीय आय (National Income)** – राष्ट्रीय आय को निकालने से पूर्व हमें साधन लागत (Factor Cost), बाजार मूल्य (Market Price), स्थिर कीमतों (Constant Price) व चालू कीमतों (Current Price) की अवधारणा को समझना होगा।

a) **साधन लागत** – किसी उत्पाद (Product) के उत्पादन में उत्पादनकर्ता को **उत्पादन के साधनों** के लिए जितना व्यय करना पड़ता है, उसे साधन लागत कहते हैं। जैसे – कच्चा माल, मजदूरी, बिजली, किराया, ब्याज, लाभ, लगान इत्यादि।

b) **बाजार मूल्य** – जब किसी उत्पाद के साधन लागत में **अप्रत्यक्ष करों** को जोड़ते हैं तथा **सब्सिडी** को घटाते हैं, तो बाजार मूल्य प्राप्त होता है।

c) **स्थिर कीमतों** – जब हम राष्ट्रीय आय का आकलन किसी **एक आधार वर्ष** को मानकर करते हैं, तो स्थिर कीमतों पर यह राष्ट्रीय आय कहलाती है। उल्लेखनीय है कि प्रचलित बाजार मूल्यों पर राष्ट्रीय आय में से **मुद्रास्फीति की वृद्धि दर** को घटाने पर स्थिर मूल्यों पर राष्ट्रीय आय प्राप्त होती है। इसे ही **वास्तविक राष्ट्रीय आय** (Real National Income) कहा जाता है। इसका उद्देश्य महंगाई के प्रभाव को हटाना होता है।

d) **चालू कीमतों** – जब हम राष्ट्रीय आय का आकलन बाजार में वर्तमान में प्रचलित कीमतों पर करते हैं, तो चालू कीमतों पर यह राष्ट्रीय आय कहलाती है। इसमें महंगाई प्रभाव सम्मिलित होता है। इसे ही **नॉमिनल राष्ट्रीय आय** (Nominal National Income) भी कहा जाता है।

**30 जनवरी, 2015 से राष्ट्रीय आय की अवधारणा तथा आधार वर्ष में एक अमूलचूल परिवर्तन** किया गया, जो निम्नानुसार है –

**नोट** – नई सरकार के आगमन पर CSO ने प्रणव सेन समिति की संस्तुति पर 30 जनवरी, 2015 को राष्ट्रीय आय के लेखांकन में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। पूर्व में राष्ट्रीय आय के आकलन हेतु आधार वर्ष के रूप में 2004-05 प्रयोग किया जाता था, किन्तु अब **2011-12** को **आधार वर्ष** के रूप में अपनाया गया है। इसके अलावा राष्ट्रीय आय संबंधी नई श्रृंखला में GDP के आकलन हेतु एक महत्वपूर्ण अवधारणात्मक परिवर्तन किया गया है। नई श्रृंखला में अब साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP at Factor Cost) का आकलन धारणा से हटा दिया गया है। **अब बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद** (GDP at Market Price) **को ही GDP** के रूप में स्वीकार किया गया है।

6) **प्रतिव्यक्ति आय (Per Capital Income)** – GDP, GNP या $NNP_{FC}$ को जनसंख्या से भाग देने पर प्रतिव्यक्ति GDP, प्रतिव्यक्ति GNP या प्रतिव्यक्ति आय प्राप्त होती है।

7) **वैयक्तिक आय (Personal Income)** – वैयक्तिक आय से अभिप्राय उस आय से है, जो एक वर्ष में किसी देश के लोगों अथवा परिवारों को वास्तविक रूप में प्राप्त होती है। यह अवधारणा देश में क्रय शक्ति को मापने की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। उल्लेखनीय है कि वैयक्तिगत आय एवं राष्ट्रीय आय में समान नहीं होती है। वैयक्तिक आय के अन्तर्गत पेंशन, बेरोजगारी भत्ता आदि को सम्मिलित किया जाता है, किन्तु कम्पनियों की आय पर कर की मात्रा, सामाजिक सुरक्षा अंशदान तथा कम्पनियों का अवित्ररित लाभ इसमें शामिल नहीं किया जाता।

**वैयक्तिक आय** = राष्ट्रीय आय + हस्तान्तरण आय – अवितरित कम्पनी लाभ – निगम कर – सामजिक सुरक्षा अंशदान

8) **व्यय योग्य आय (Disposable Income)** – वैयक्तिक आय में से जब प्रत्यक्ष करों को घटाया जाता है, तो व्यय योग्य आय प्राप्त हो जाती है।

## ❐ भारत में राष्ट्रीय आय के अनुमान (Estimation of National Income)

भारत मे सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय के अनुमान का प्रयास दादाभाई नौरोजी ने किया था। उन्होंने अपनी पुस्तक **पॉवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया** में प्रतिव्यक्ति आय **20 रुपए (1867-68)** होने का आकलन किया था। भारत सरकार ने 1949 में **पी. सी.**

**महालनोबिस** की अध्यक्षता में **राष्ट्रीय आय समिति** (डॉ. आर. गाडगिल एवं वी. के. आर. वी. राव समिति सदस्य थे) का गठन किया था, जिसका उद्देश्य भारत की राष्ट्रीय आय के सम्बन्ध में अनुमान लगाना था। समिति ने अप्रैल, 1951 में अपनी प्रथम रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें 1948-49 के लिए देश की कुल राष्ट्रीय आय 8,650 करोड़ रुपए तथा प्रतिव्यक्ति आय 220 रुपए बताई। उस समय यह अनुमान वाणिज्य मंत्रालय द्वारा किए गए थे। इसके बाद राष्ट्रीय आय के आकड़ों का संकलन करने के लिए सरकार ने **1951** में **केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन** (CSO) की स्थापना की।

## ❐ राष्ट्रीय आय का वितरण (Distribution of National Income)

विगत वर्षों में भारत की राष्ट्रीय आय में विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिशत वितरण इस प्रकार रहा -

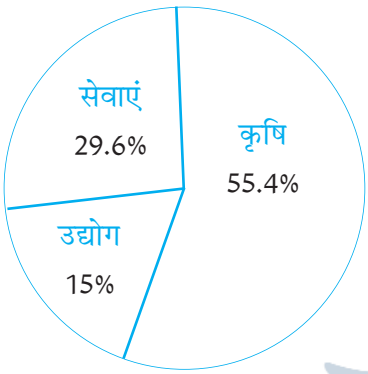


1950-1951

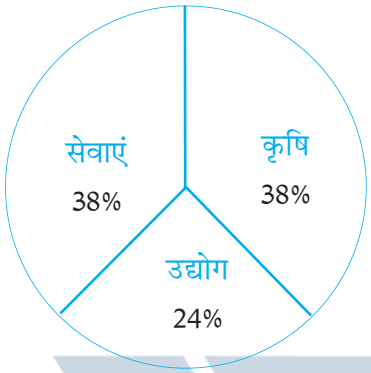


1980-1981

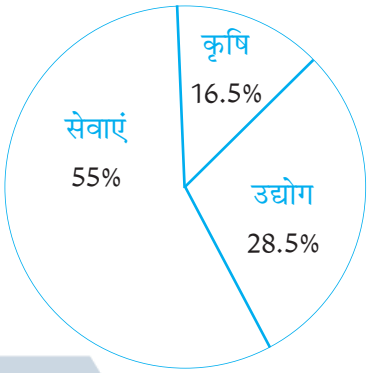


2019-2020

**उपर्युक्त सभी अनुमान स्थिर कीमतों पर** है। इन अनुमानों से स्पष्ट होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय में कृषि का भाग निरन्तर घटता जा रहा है एवं उद्योग का स्थान थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ स्थिर बना हुआ है। वहीं अर्थव्यवस्था का मुख्य इंजन सेवा क्षेत्र (54 प्रतिशत) बनकर उभरा है। राष्ट्रीय आय का यह संक्रमण औद्योगिक क्रांति के उन देशों से भिन्न रहा है, जहां संक्रमण कृषि ⇨ उद्योग ⇨ सेवा का था वहीं भारत में यह संक्रमण सीधा कृषि से सेवा क्षेत्र में हुआ है। इस कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को कई समस्याओं का सामना करना भी पड़ रहा है। आर्थर लुइस के अनुसार उद्योग क्षेत्र कृषि से छूटी श्रम शक्ति के लिए शरणार्थी गृह (Rescue Home) की तरह कार्य करता है। भारत में यह हो नहीं पाया एवं कृषि क्षेत्र की प्रछन्न श्रम शक्ति उद्योगों द्वारा सोखी (Absorb) नहीं जा सकी, जो व्यापक बेरोजगारी, गरीबी, असमानता का महत्वपूर्ण कारण है।

यद्यपि पिछले वर्षों में राष्ट्रीय आय व प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि हुई है, किन्तु भारत की कुल जनसंख्या का बड़ा भाग अब भी गरीबी रेखा के नीचे रह रहा है।

## ❐ राष्ट्रीय आय के मापक (वर्ष 2011-12 के मूल्य पर)

| राष्ट्रीय आय के मापक | 2018-19 | 2019-20 |
|---|---|---|
| सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर (GDP) | 6.8 प्रतिशत | 5 प्रतिशत |
| प्रतिव्यक्ति आय (PCA) | 5.6 प्रतिशत (92,565 रुपए) | 4.3 प्रतिशत (96563) |

**प्रेस इंफॉरमेशन ब्यूरो के अनुसार (PIB)**

आर्थिक समीक्षा 2019-20 के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था वर्तमान में लगभग तीन खरब डॉलर की है तथा अगले पांच वर्षों में इसे 5 खरब डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

## ❐ हिन्दू वृद्धि दर (Hindu Rate of Growth)

यह राष्ट्रीय आय अथवा भारतीय अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि दर से सम्बन्धित है। इस आवधारणा के प्रतिपादक प्रो. राजकृष्ण थे। 1991 से पहले और स्वाधीनता के प्रथम 3 दशक (50-80) के दौरान भारत (समाजवादी अर्थव्यवस्था) की वास्तविक आर्थिक वृद्धि 3.5 प्रतिशत की दर से बढ़ने के कारण इसे हिन्दू वृद्धि दर के नाम से अभिव्यक्त किया गया।

# आर्थिक विकास
# Economic Development

आर्थिक विकास की अवधारणा आर्थिक वृद्धि से अधिक व्यापक है। यह एक दीर्घकालीन, सतत्, गत्यात्मक तथा बहुआयामी प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में **आर्थिक व गैर-आर्थिक** दोनों ही प्रकार के तत्वों का अध्ययन किया जाता है। इसका संबंध सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक कारकों के गुणात्मक (Qualitative) एवं मात्रात्मक (Quantitative) परिवर्तन से है। दूसरे शब्दों में सामाजिक समानता के साथ आर्थिक वृद्धि को ही आर्थिक विकास कहते हैं। यह तभी संभव है, जब आर्थिक वृद्धि के लाभों का अपेक्षाकृत समानतापूर्ण वितरण हो तथा जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life) में सुधार हो।

किसी देश के आर्थिक वृद्धि को प्रतिव्यक्ति आय में मापा जाता है, परन्तु प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि मानव विकास के गुणात्मक पहलु पर प्रकाश नहीं डालती, इसलिए इसे आर्थिक विकास के माप के रूप में नहीं लेते हैं। आर्थिक विकास का मापन मुश्किल है, क्योंकि इसमें मानव विकास के कई आयाम होते हैं, जैसे - निर्धनता, साक्षरता, जीवन प्रत्याशा, लिंग समानता आदि। अमर्त कुमार सेन के अनुसार आर्थिक वृद्धि एक वस्तुनिष्ठ अवधारणा है, जबकि आर्थिक विकास एक व्यक्तिनिष्ठ अवधारणा।

### ◆ मानव विकास सूचकांक (Human Development Index)

इस सूचकांक का प्रतिपादन 1990 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) से जुड़े हुए अर्थशास्त्री महबूब-उल-हक व उनके सहयोगी अमर्त्य सेन ने किया था। प्रो. अमर्त्य सेन वास्तविक गरीबी (Real Poverty) की अवधारणा HDI निर्माण में प्रमुख स्रोत रही है। HDI के 3 आधारभूत आयाम हैं - शिक्षा, जीवन प्रत्याशा एवं जीवनस्तर। यह सूचकांक **कैपेबिलिटिज की अवधारणा** पर आधारित है।

**मानव विकास सूचकांक (Human Development Index)**

| आयाम | संकेतक | सूचकांक |
|---|---|---|
| स्वास्थ्य | जन्म पर जीवन प्रत्याशा | जीनव प्रत्याशा सूचकांक |
| शिक्षा | स्कलावधि के औसत वर्ष<br>स्कूलावधि के अनुमानित वर्ष | शिक्षा सूचकांक |
| जीवनस्तर | प्रतिव्यक्ति आय | आय सूचकांक |

UNDP द्वारा सितम्बर, 2019 को HDR-2019 जारी की गई, जिसमें 2018 में 189 देशों में भारत का स्थान 0.647 अंकों के साथ 129वां रहा। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर क्रमशः नार्वे, स्वीट्जरलैण्ड एवं आयरलैण्ड है। अंतिम स्थान पर नाइजर रहा।

### ❒ मानव विकास रिपोर्ट 2010 (HDR 2010)

मानव विकास रिपोर्ट 2010 (HDR 2010) में UNDP ने विषमता एवं गरीबी के 3 बहुआयामी मापों को प्रस्तुत किया -

1) **असमानता समायोजित मानव विकास सूचकांक (Inequality Adjusted Human Development Index - IHDI)** - UNDP द्वारा जारी मानव विकास सूचकांक केवल औसत को प्रदर्शित करता है, किसी देश के भीतर लोगों के मानव विकास में पाई जाने वाली विषमताओं को ध्यान में नहीं रखता है। असमानता समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) न केवल स्वास्थ्य, शिक्षा तथा आय के द्वारा मापित औसत को ध्यान में रखता है, बल्कि इसको भी ध्यान में रखता है कि यह किस प्रकार वितरीत है। यह HDI के प्रत्येक आयाम में असमानता को प्रदर्शित करता है।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत HDI है। यदि प्रत्येक व्यक्ति के सम्बन्ध में जीवन प्रत्याशा, शिक्षा तथा आय प्राप्त HDI के औसत के बराबर होगा, तो व्यक्तिगत स्तर पर HDI तथा औसत HDI बराबर होगा। परन्तु वास्तविक स्थिति में व्यक्तिगत HDI तथा औसत HDI में असमानता पाई जाती है। अतः इस असमानता को स्पष्ट करने के लिए UNDP ने असमानता समायोजित मानव विकास सूचकांक जारी किया है। HDI तथा IHDI का अन्तर असमानता के कारण मानव